नईदुनिया

रुपए बचाने की सफलता आरबीआई के लिए बनी नई चुनौती

मुंबई

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक) या एफसीएनआर(बी) योजना की सफलता के बाद एक अप्रत्याशित चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। जिस योजना को डालर आकर्षित कर रुपये के अनियंत्रित अवमूल्यन को रोकने के लिए सराहा गया था, उसी ने अब घरेलू बैंकिंग प्रणाली में 10 लाख करोड़ रुपए से अधिक की अधिशेष तरलता पैदा कर दी है।

आरबीआई के सामने इस विशाल धन को संभालने के लिए दो कठिन और महंगे विकल्प हैं, जो भविष्य में विनिमय दर में गिरावट या पुनर्भुगतान के दबाव से पहले ही लागतें बढ़ा रहे हैं। इस विशेष सुविधा के तहत कुल 136.4 अरब डालर जुटाए गए, जिसमें

घरेलू बैंकिंग प्रणाली में 10 लाख करोड़ रुपए की तरलता का संकट

एफसीएनआर(बी) जमा के माध्यम से .127.2 अरब डालर शामिल हैं, और आरबीआई ने अधिकांश विदेशी मुद्रा को अवशोषित कर रुपये जारी किए, जिससे यह तरलता समस्या उत्पन्न हुई।

पहला विकल्प था कि डालर को बाजार में आने दिया जाए, जिससे रुपया और मजबूत होता। 2013 में, जब भारत का चालू खाता घाटा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4.7 फीसदी था और मुद्रास्फीति चरम पर थी, यह कदम उपयुक्त हो सकता था। उस समय एफसीएनआर(बी) ने लगभग 34 अरब डालर आकर्षित किए थे। हालांकि, वर्तमान परिदृश्य भिन्न है।

भारत के पास पर्याप्त भंडार, स्वस्थ वृद्धि दर और लगभग शून्य चालू खाता घाटा है। बाजार में पूरी तरह से पैसा आने देने से रुपया 90 रुपए से नीचे जा सकता था, जिससे निर्यात को नुकसान होता और घरेलू विनिर्माण कमजोर पड़ता। यही कारण था कि आरबीआई ने अधिकांश विदेशी मुद्रा को अवशोषित करना उचित समझा, लेकिन इससे विनिमय दर की समस्या अब तरलता की समस्या में बदल गई है।

दूसरा विकल्प यह है कि बैंकों के पास भंडार छोड़ दिया जाए ताकि वे अधिक ऋण दे सकें। हालांकि, यह उच्च ताकत वाला धन है, और बैंकों द्वारा ऋण देने से व्यापक मुद्रा कई गुना बढ़ सकती है, जिससे अंतत: मुद्रास्फीति उत्पन्न होने का जोखिम है।

इससे भी गहरा खतरा रिजर्व रैचेट प्रभाव का है, जैसा कि विरल आचार्य और अन्य अर्थशास्त्रियों के शोध में सामने आया है। इसके तहत बैंक प्रचुर भंडार के आधार पर अपनी बैलेंस शीट का पुनर्गठन करते हैं। जब केंद्रीय बैंक इन भंडारों को निकालने का प्रयास करता है, तो बैंक तरलता का संचय कर सकते हैं, ऋण देना कम कर सकते हैं, या अल्पकालिक वित्तपोषण के लिए संघर्ष कर सकते हैं, जिससे आरबीआई को फिर से भंडार डालने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। यह दर्शाता है कि भंडार बनाना आसान है, लेकिन उन्हें हटाना एक कठिन कार्य है।

न्यूज ब्रीफ

माडल-वार बिक्री के आंकड़ों में स्कार्पियो सबसे आगे

नई दिल्ली। अगस्त 2026 की महिंद्रा एंड महिंद्रा की माडल-वार बिक्री के आंकड़ों में स्कार्पियो सबसे आगे रही है। अगस्त में स्कार्पियो क्लासिक और स्कार्पियो एन की कुल 15,576 यूनिट बिकीं, जबकि अगस्त 2025 में 9,840 यूनिट की बिक्री हुई थी। इस तरह सालाना आधार पर 5,736 यूनिट की बढ़ोतरी के साथ बिक्री में 58.29 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। स्कार्पियो का बाजार हिस्सा 26.29 प्रतिशत रहा। एक्सयूवी 7एक्स0 कंपनी की दूसरी सबसे ज्यादा बिकने वाली माडल रही। अगस्त 2026 में इसकी 8,541 यूनिट बिकीं, जबकि पिछले साल इसी अवधि में 4,956 यूनिट की बिक्री हुई थी। बिक्री में 3,585 यूनिट की बढ़ोतरी के साथ इसे 72.34 प्रतिशत की सालाना वृद्धि मिली। इसका बाजार हिस्सा 14.41 प्रतिशत रहा। एक्सयूवी 3एक्स0 और इसके इलेक्ट्रिक संस्करण की 8,302 यूनिट बिकीं। पिछले साल यह आंकड़ा 5,521 यूनिट था। यानी बिक्री 50.37 प्रतिशत बढ़ी और बाजार हिस्सा 14.01 प्रतिशत रहा। बोलेरो की 7,777 यूनिट बिकीं, जो अगस्त 2025 की 7,617 यूनिट से 2.10 प्रतिशत अधिक है। इसका बाजार हिस्सा 13.12 प्रतिशत रहा। इलेक्ट्रिक पोर्टफोलियो में एक्सईवी 9एस और 9ई ने सबसे तेज वृद्धि दर्ज की। इन दोनों की 6,509 यूनिट बिकीं, जबकि पिछले साल 2,313 यूनिट की बिक्री हुई थी। इस तरह 181.41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई और बाजार हिस्सा 10.98 प्रतिशत रहा। थार राक्स की 5,817 यूनिट और थार की 4,647 यूनिट बिकीं। थार की बिक्री में 119.82 प्रतिशत की वृद्धि हुई। बीई 6 की 1,696 यूनिट बिकीं। वहीं बोलेरो नियो प्लस की बिक्री घटकर 382 यूनिट रह गई।

विलीज सीजे-2ए की याद में जीप ने पेश किया रैंगलर जेएल-2ए

नई दिल्ली। साल 1945 में पेश की गई विलीज सीजे-2ए की विरासत को ध्यान में रखकर जीप कंपनी ने अपनी मशहूर रैंगलर का खास संस्करण जेएल-2ए पेश किया है। नया रैंगलर जेएल-2ए मौजूदा रैंगलर रुबिकान पर आधारित है। सीजे-2ए जीप का वह माडल था, जिसे आम नागरिकों के इस्तेमाल के लिए विकसित किया गया था। कंपनी ने इसके डिजाइन और इंटीरियर में पुराने दौर की जीप से प्रेरित कई बदलाव किए हैं, जबकि आफ-रोड क्षमता से जुड़े प्रमुख यांत्रिक उपकरणों में बदलाव नहीं किया गया है। इसकी बुकिंग अक्टूबर से शुरू होगी। जेएल-2ए के दो-दरवाजे वाले संस्करण को गोबी रंग में पेश किया गया है, जो मूल सीजे-2ए के हार्वेस्ट टैन रंग की याद दिलाता है। चार-दरवाजे वाला संस्करण 41 नाम के जैतूनी हरे रंग में उपलब्ध होगा। इसके अलावा ब्राइट व्हाइट, स्टिंग ग्रे, घोस्ट और जूस रंगों के विकल्प भी मिलेंगे। इसमें 17 इंच के पुराने अंदाज वाले पहिए और 33 इंच के बीएफगुडरिच केओ2 आल-टेरेन टायर दिए गए हैं।

किआ इंडिया ने की लाइफटाइम हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स, महिंद्रा और एमजी मोटर इंडिया के बाद अब किआ इंडिया ने भी अपनी इलेक्ट्रिक कार के लिए लाइफटाइम हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा की है। भारत में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री बढ़ाने के लिए कंपनियां ग्राहकों को बैटरी से जुड़ी अतिरिक्त सुरक्षा देने पर जोर दे रही हैं। इसी कड़ी में अब यह सुविधा किआ कैरेंस क्लैविस ईवी के पहले मालिकों को देने जा रही है1 अगस्त 2026 से बेची जाने वाली कारों पर यह वारंटी लागू होगी। हालांकि, लाइफटाइम का अर्थ यहां अधिकतम 15 साल या अनलिमिटेड किलोमीटर का कवरेज है। कंपनी के अनुसार, पहले कैरेंस क्लैविस ईवी पर 8 साल या 1.60 लाख किलोमीटर की बैटरी वारंटी मिलती थी। नई योजना के तहत पहले मालिक को 15 साल तक बिना किलोमीटर सीमा के हाई-वोल्टेज बैटरी कवरेज मिलेगा। वहीं, दूसरे मालिक के लिए 8 साल या 1.60 लाख किलोमीटर, जो भी पहले हो, की वारंटी लागू रहेगी। टैक्सी और फ्लीट जैसी व्यावसायिक गाड़ियों पर भी यही 8 साल या 1.60 लाख किलोमीटर का कवरेज रहेगा। 1 अगस्त 2026 से पहले कैरेंस क्लैविस ईवी खरीद चुके ग्राहक भी अपनी मौजूदा बैटरी वारंटी को 15 साल तक बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें कर सहित 3,400 रुपये का भुगतान करना होगा।

लागत से कम दाम पर बिकवाली से मंदी की चपेट में तेल-तिलहन बाजार

पैसे की तंगी से आयातकों को घाटा, लागत से कम दाम पर बिके सोयाबीन-पाम तेल

नई दिल्ली

बीते सप्ताह कांडला बंदरगाह पर आयातकों द्वारा पैसे की तंगी और कमजोर मांग के चलते लागत से नीचे दाम पर की गई बिकवाली से लगभग सभी तेल-तिलहन कीमतों में भारी गिरावट दर्ज की गई। मूंगफली तेल की निरंतर मांग के बीच उसके दाम स्थिर रहे। कांडला बंदरगाह पर आयातकों को पैसे की तंगी के चलते लागत से नीचे दाम पर तेल बेचने को मजबूर होना पड़ा, जिससे बीते सप्ताह लगभग सभी तेल-तिलहन की कीमतों में भारी गिरावट आई। सूत्रों के अनुसार, आयातित सोयाबीन तेल अपनी वास्तविक लागत (127 रुपये) से लगभग 10-11 रुपये प्रति किलो नीचे (116.50 रुपये) बिक रहा है, यहां तक कि ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे प्रमुख उत्पादक देशों से भी सस्ता मिल रहा है।

इसी तरह, कच्चे पाम तेल को रिफाइंड कर पामोलीन बनाने की लागत (150 रुपये) भी बिक्री मूल्य (145 रुपये) से अधिक बैठ रही है, जिससे पाम तेल में भी गिरावट देखी गई। ऊंचे दाम के कारण सरसों खप नहीं पा रहा और मंडियों में बिनौला की नई फसल की आवक ने भी सरसों और बिनौला तेल कीमतों में गिरावट दर्ज कराई। हालांकि, बाजार में निरंतर मांग के चलते मूंगफली तेल-तिलहन के दाम इस गिरावट से अछूते रहे और स्थिर बने हुए हैं।

बीते सप्ताह सरसों दाना 150 रुपये की गिरावट के साथ 8,150-8,200 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों तेल दादरी 350 रुपये की गिरावट के साथ 16,450 रुपये प्रति क्विंटल तथा सरसों पक्की एवं कच्ची घानी तेल क्रमश: 50-50 रुपये की गिरावट के साथ क्रमश: 2,685-2,785 रुपये और 2,685-2,835 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ।

सोयाबीन दाना और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमश: 250-250 रुपये की गिरावट के साथ क्रमश: 6,050-6,100 रुपये और 5,900-6,000 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। इसी प्रकार आयातकों की लागत से नीचे दाम पर बिकवाली की वजह से दिल्ली में सोयाबीन तेल 200 रुपये की गिरावट के साथ 15,300 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन इंदौर तेल 200 रुपये की गिरावट के साथ 15,100 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

दूसरी ओर, सोयाबीन डीगम तेल 300 रुपये गिरावट के साथ 11,650 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। विदेशों में आई गिरावट के बावजूद निरंतर मांग के कारण बीते सप्ताह मूंगफली तिलहन का दाम 7,600-8,175 रुपये क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 17,500 रुपये क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 2,755-3,055 रुपये प्रति टिन पर स्थिर रुख के साथ बंद हुए।

सीपीओ तेल का दाम 150 रुपये की गिरावट के साथ 13,975 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। पामोलीन दिल्ली 325 रुपये की गिरावट के साथ 15,700 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल 225 रुपये की गिरावट के साथ 14,500 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ नयी फसल की आवक शुरू होने के कारण बीते सप्ताह बिनौला तेल का दाम 500 रुपये की गिरावट के साथ 15,700 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

1 अक्टूबर से एलपीजी सब्सिडी के लिए बायोमेट्रिक आधार आथेंटिकेशन अनिवार्य

नई दिल्ली

फर्जी कनेक्शनों पर लगेगी लगाम; बिना प्रमाणीकरण बाजार भाव पर मिलेगा सिलेंडर

घरेलू रसोई गैस उपभोक्ताओं के लिए एक अहम खबर है। केंद्र सरकार ने 1 अक्टूबर से सब्सिडी वाले एलपीजी सिलेंडर बुक करने के लिए बायोमेट्रिक आधार आथेंटिकेशन को अनिवार्य कर दिया है। इ इस फैसले का मकसद सब्सिडी का लाभ केवल पात्र परिवारों तक पहुंचाना और फर्जी कनेक्शनों पर लगाम लगाना है। जिन ग्राहकों ने पहले ही यह प्रक्रिया पूरी कर ली है, उन्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं होगी। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अनुसार, 19 सितंबर तक लगभग 90 फीसदी (27.43 करोड़) घरेलू एलपीजी ग्राहकों ने अपना बायोमेट्रिक आधार प्रमाणीकरण पूरा कर लिया है। जिन ग्राहकों ने अभी तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं की है, उन्हें 1 अक्टूबर के बाद सब्सिडी वाले दाम पर सिलेंडर लेने में परेशानी हो सकती है और उन्हें बाजार भाव पर सिलेंडर खरीदना पड़ सकता है। सरकार का यह कदम सब्सिडी के भारी वित्तीय बोझ को सही दिशा में ले जाने और धोखाधड़ी रोकने के लिए आवश्यक है, क्योंकि कई बार फर्जी कनेक्शनों के कारण वास्तविक लाभार्थियों तक सब्सिडी का लाभ नहीं पहुंच पाता। सरकार ने इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए कई विकल्प दिए हैं। ग्राहक डिलीवरी बाय के मोबाइल या बायोमेट्रिक स्कैनर के जरिए घर पर ही फिंगरप्रिंट या फेस-आईडी आथेंटिकेशन करा सकते हैं। इसके अलावा, संबंधित गैस एजेंसी के कार्यालय में जाकर बायोमेट्रिक काउंटर से अपनी ई-केवाईसी पूरी की जा सकती है। ग्राहक अपने मोबाइल पर संबंधित आयल मार्केटिंग कंपनियों के आधिकारिक ऐप्स के माध्यम से भी फेस-आथेंटिकेशन कर सकते हैं। किसी भी सहायता या पूछताछ के लिए सरकार के टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर 1800 2333 555 पर संपर्क किया जा सकता है। यह प्रमाणीकरण अभियान अक्टूबर 2023 से चल रहा है और इसकी समय-सीमा सात बार बढ़ाई जा चुकी है। तेल मार्केटिंग कंपनियों ने ग्राहकों को जागरूक करने के लिए 12 करोड़ से ज्यादा एसएमएस और वाटसऐप मैसेज भेजे हैं। सरकार अंतरराष्ट्रीय दरों के मुकाबले ग्राहकों को कम कीमत पर सिलेंडर मुहैया कराने के लिए भारी वित्तीय बोझ उठाती है, जिसे सही लाभार्थियों तक पहुंचाना महत्वपूर्ण है। स्पष्ट किया गया है कि 1 अक्टूबर के बाद एलपीजी की सप्लाई बंद नहीं होगी।

इस सप्ताह 170 से अधिक कंपनियां देंगी डिविडेंड

नई दिल्ली। शेयर बाजार के निवेशकों के लिए 21 से 25 सितंबर का सप्ताह बेहद खास रहने वाला है। इस दौरान 170 से भी अधिक कंपनियां अपने शेयरधारकों को लाभांश (डिविडेंड) का तोहफा देने जा रही हैं। इनमें कुछ दिग्गज कंपनियां मोटा डिविडेंड देने का ऐलान कर चुकी हैं, जिससे निवेशकों में उत्साह है। डिविडेंड देने वाली कंपनियों की लंबी लिस्ट में महाराष्ट्र स्कूटर्स 160 रुपये, बजाज होल्डिंग्स एंड इन्वेस्टमेंट 65 रुपये और सदर्न गैस 60 रुपये प्रति शेयर तक का लाभांश दे रही हैं। यह सप्ताह फाइनल और स्पेशल, दोनों तरह के डिविडेंड के लिए महत्वपूर्ण होगा। बाजार के विशेषज्ञों के अनुसार डिविडेंड का लाभ लेने के लिए निवेशकों को एक्स-डिविडेंड डेट से कम से कम एक कारोबारी दिन पहले शेयर खरीदने होंगे, ताकि रिकार्ड डेट तक वे डीमैट खाते में आ सकें। हालांकि, सिर्फ ज्यादा डिविडेंड देखकर किसी शेयर में जल्दबाजी में निवेश करने से बचना चाहिए। निवेशकों को कंपनी की वित्तीय स्थिति और डिविडेंड के बाद शेयर की कीमत पर संभावित प्रभाव का भी विश्लेषण करना चाहिए।

वारेन बफे का मास्टरस्ट्रोक! खरबों की कंपनी का चेयरमैन बना किसान बेटा हावर्ड

वित्तीय दुनिया से दूर रहे हावर्ड अब कंपनी की संस्कृति और मूल्यों को आगे बढ़ाएंगे

नई दिल्ली

दुनिया के सबसे बड़े निवेशक और ओमाहा के ओरेकल के नाम से मशहूर वारेन बफे ने आखिरकार अपनी खरबों डालर की कंपनी बर्कशायर हैथवे के उत्तराधिकारी की घोषणा कर दी है। उन्होंने अपने बड़े बेटे हावर्ड ग्राहम बफे को कंपनी का चेयरमैन नियुक्त किया है। यह नियुक्ति बर्कशायर के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जहां हावर्ड कंपनी के दीर्घकालिक मूल्यों और संस्कृति को संरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जबकि दैनिक परिचालन सीईओ ग्रेग एबेल के जिम्मे रहेगा।

हावर्ड ग्राहम बफे का करियर अपने पिता वारेन बफे या किसी भी पारंपरिक कार्पोरेट लीडर से बेहद अलग रहा है। उन्होंने बर्कशायर हैथवे से जुड़ने से पहले एक किसान के रूप में हजारों एकड़ जमीन पर खेती की, पुलिस शेरिफ के तौर पर भी सेवा दी और एक युद्ध फोटोग्राफर के रूप में भी काम किया। वह 1 अरब डालर के एक गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) का संचालन करते हैं, जिसने सूडान और कांगो जैसे गरीब देशों में

उल्लेखनीय काम किया है। उनके सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें मैक्सिको, कोलंबिया और रवांडा जैसे देशों में काफी सम्मान मिला है। बफे ने स्पष्ट किया है कि हावर्ड का काम कंपनी के मूलभूत सिद्धांतों और संस्कृति को बनाए रखना होगा, न कि बैलेंस शीट या दैनिक परिचालन देखना।

हावर्ड साल 1993 से बर्कशायर के बोर्ड में हैं। उनकी नई चेयरमैन के तौर पर सैलरी का खुलासा अभी नहीं किया गया है, हालांकि निदेशक के तौर पर पहले उन्हें लगभग 3 हजार डालर (करीब 2.70 लाख रुपये) सालाना मिलते थे। हालांकि हावर्ड को कंपनी का चेयरमैन बनाया गया है, लेकिन उन्हें वारेन बफे की पूरी 145 अरब डालर की नेट वर्थ का एकमात्र उत्तराधिकारी नहीं माना जा सकता। वारेन के दो अन्य बच्चे, बेटी सूजी और बेटे पीटरसन भी इस संपत्ति में हकदार हैं। वारेन बफे ने पहले ही अपनी अधिकांश संपत्ति दान करने की मंशा जताई है, जबकि अपने बच्चों के लिए सालाना 50 करोड़ डालर की आय का प्रावधान किया है। हावर्ड की यह नियुक्ति बर्कशायर हैथवे में नेतृत्व के एक नए युग की शुरुआत करती है, जो वित्तीय लाभ के बजाय मूल्यों और विरासत पर केंद्रित होगी।

स्क्रैम्बलर 400एक्स बाइक नए रंग विकल्प के साथ पेश

नई दिल्ली

भारतीय बाजार में ट्रायम्फ मोटरसाइकिल्स ने अपनी लोकप्रिय स्क्रैम्बलर 400एक्स को एक नए रंग विकल्प मैट प्यूटर ग्रे और मैट खाकी बैंड के साथ पेश किया है। यह अपडेट मुख्य रूप से बाइक के दृश्य अपील को बढ़ाने के लिए है, जबकि इसके दमदार इंजन और आफ-रोड क्षमता से जुड़े फीचर्स में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

खास बात यह है कि इस नए रंग के बावजूद मोटरसाइकिल की एक्स-शोरूम कीमत पहले की तरह 2.65 लाख रुपये ही बनी हुई है। नई रंग योजना में फ्यूल टैंक को मैट ग्रे फिनिश दी गई है और उस पर मैट खाकी रंग का बैंड है, जो बाइक को एक नया और अधिक मजबूत लुक देता है। हालांकि, बाइक के मूल स्क्रैम्बलर डिजाइन में कोई बड़ा परिवर्तन

नहीं हुआ है।

इसमें गोल हेडलैंप, टियरड्राप आकार का फ्यूल टैंक, सुनहरे रंग के यूएसडी फ्रंट फोर्क और भूरे रंग की आरामदायक सीट पहले की तरह मौजूद हैं। यह नया रंग मई 2025 में पेश किए गए लावा रेड सैटिन विकल्प से अलग अनुभव देता है। स्क्रैम्बलर 400एक्स में 349 सीसी का सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन है, जो 36.5 बीएचपी की अधिकतम पावर और 32 न्यूटन मीटर का पीक टार्क पैदा करता है। यह इंजन शहर की सड़कों और हाईवे, दोनों पर बेहतरीन प्रदर्शन के लिए अनुकूल है।

इसमें स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल, राइड-बाय-वायर थ्राटल और स्विचेबल डुअल-चैनल एबीएस जैसी उन्नत सुरक्षा और सुविधाएँ मिलती हैं। इसके अतिरिक्त, एलईडी लाइटिंग और सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर भी बाइक का हिस्सा हैं। बड़े पहियों का संयोजन - आगे 19 इंच और पीछे 17 इंच के पहिए - स्क्रैम्बलर 400एक्स को ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर भी आसानी से चलाने में मदद करता है। यह विशेषता इसे केवल शहर तक सीमित नहीं रखती बल्कि हल्की आफ-रोडिंग और लंबी दूरी की यात्राओं के लिए भी उपयुक्त बनाती है।

सेमीकंडक्टर महाशक्ति बन रहा भारत, खतरे को लेकर मंत्री ने चेताया, चिप डिजाइन और विनिर्माण दोनों में अपनी क्षमताओं का कर रहा विस्तार

नई दिल्ली। भारत वैश्विक सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है, जो चिप डिजाइन और विनिर्माण दोनों में अपनी क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने आगाह किया है कि भारत की इस बढ़ती क्षमता को वैश्विक चिप उद्योग के स्थापित खिलाड़ी खतरे के रूप में देख सकते हैं। उन्होंने देश को संभावित साइबर हमलों, भू-राजनीतिक जोखिमों और अन्य व्यवधानों के प्रति लगातार सतर्क रहने की सलाह दी। मंत्री ने जोर दिया कि भारत अब चिप डिजाइन और विनिर्माण कर सकता है, जिससे कई स्थापित कंपनियों के हित प्रभावित होंगे। भारत केवल चिप असेंबली तक सीमित न रहकर संपूर्ण सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र - डिजाइन, विनिर्माण, उपकरण, सामग्री, पैकेजिंग, आरएंडडी और मानव संसाधन - विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। वैष्णव ने उद्योग को साइबर हमलों और अन्य व्यवधानों के लिए तैयार रहने की सलाह दी, क्योंकि दुनिया भारत को विश्वसनीय भागीदार के रूप में देख रही है। इस दिशा में, मंत्रिमंडल ने 1.27 लाख करोड़ रुपये के सेमीकान 2.0 को मंजूरी दी है, जो चिप डिजाइन से लेकर प्रतिभा विकास तक पूरे क्षेत्र को बढ़ावा देगा।